# प्रारंभिक परीक्षा

## EPFO ने पेंशनभोगियों के लिए केंद्रीकृत प्रणाली शुरू करने का काम पूरा किया

### संदर्भ

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने कर्मचारी पेंशन योजना के तहत पीएफ पेंशन प्रदान करने के लिए नई केंद्रीकृत पेंशन भुगतान प्रणाली (CPPS) का पूर्ण पैमाने पर कार्यान्वयन पूरा कर लिया है।

### केंद्रीकृत पेंशन भुगतान प्रणाली (CPPS) की मुख्य विशेषताएं -

- **पेंशन तक निर्बाध पहुंच:**
    - पेंशनभोगी अब देश में कहीं भी, किसी भी बैंक, किसी भी शाखा से अपनी पेंशन प्राप्त कर सकते हैं।
    - अब बैंकों में जाकर भौतिक सत्यापन की आवश्यकता नहीं है।
    - जारी होते ही पेंशन जमा कर दी जाती है।
- **PPO हस्तांतरण के बिना राष्ट्रव्यापी संवितरण:**
    - यह प्रणाली पेंशनभोगियों के स्थानांतरण या बैंक/शाखा बदलने पर पेंशन भुगतान आदेश (PPO) को स्थानांतरित करने की आवश्यकता को समाप्त कर देती है।
    - इससे उन पेंशनभोगियों को राहत मिलेगी जो सेवानिवृत्ति के बाद अपने गृहनगर चले जाते हैं।
- **एकीकृत पेंशन संवितरण:** CPPS ने पहले की विकेन्द्रीकृत प्रणाली का स्थान ले लिया है, जहां क्षेत्रीय EPFO कार्यालय कुछ बैंकों के साथ समझौते करते थे।

### कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO)

- **यह एक वैधानिक निकाय है जो कर्मचारी भविष्य निधि और विविध प्रावधान अधिनियम, 1952 के तहत अस्तित्व में आया।**
- इस अधिनियम और इससे संबंधित योजनाओं का प्रशासन एक त्रिपक्षीय निकाय के अधिकार क्षेत्र में आता है जिसे केंद्रीय न्यासी बोर्ड और कर्मचारी भविष्य निधि के नाम से जाना जाता है।
    - सीबीटी में सरकार (केन्द्र और राज्य दोनों), नियोक्ता और कर्मचारियों सहित विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि शामिल हैं।
- यह ग्राहकों की संख्या और वित्तीय लेनदेन की मात्रा के संदर्भ में विश्व के सबसे बड़े सामाजिक सुरक्षा संगठनों में से एक है।
- **यह भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में है।**

**स्रोत:**

- द हिंदू - पेंशनभोगियों के लिए केंद्रीकृत प्रणाली की शुरुआत

# त्सांगपो बांध - दुनिया का सबसे बड़ा बांध

## संदर्भ

चीन ने यारलुंग त्सांगपो नदी (ब्रह्मपुत्र का तिब्बती नाम) के निचले हिस्से पर दुनिया के सबसे बड़े जलविद्युत बांध के निर्माण को मंजूरी दे दी है।

## त्सांगपो बांध के बारे में -

- **स्थान:** मेडोग काउंटी, तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र, ग्रेट यू बेंड के पास।
- **परियोजना की विशेषताएं:**
  - **नियोजित क्षमता:** 60,000 मेगावाट.
    - थ्री गॉर्जेस डैम (वर्तमान में दुनिया की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजना) के विद्युत उत्पादन का तीन गुना।
  - यह विश्व की सबसे बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजना होगी।
  - **अपेक्षित वार्षिक विद्युत उत्पादन:** 300 बिलियन kWh.
- **यारलुंग त्सांगपो नदी पथ:**
  - यह नदी तिब्बत से निकलती है और अरुणाचल प्रदेश में सियांग के रूप में भारत में प्रवेश करती है।
  - सियांग नदी असम में दिबांग और लोहित से मिलती है; दोनों मिलकर ब्रह्मपुत्र बनाती हैं।
  - भारत के बाद यह यह नदी बांग्लादेश में बहती है और बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

## रणनीतिक चिंताएं और जोखिम

- **पर्यावरणीय जोखिम:**
  - यह क्षेत्र भूकंपीय दृष्टि से सक्रिय है तथा भूकंप के प्रति संवेदनशील है।
  - बड़े बांध नदी की आकृति को बदल सकते हैं, भूकंप पैदा कर सकते हैं और आबादी को विस्थापित कर सकते हैं (जैसा कि थ्री गॉर्जेस बांध मामले में देखा गया)।
- **भारत पर प्रभाव (निचले तटवर्ती राज्य):**
  - **जल प्रवाह:** ब्रह्मपुत्र के प्रवाह में संभावित कमी।
  - **गाद प्रवाह:** रुकावट से कृषि को नुकसान हो सकता है।
  - **आजीविका:** अरुणाचल प्रदेश और असम के लाखों लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
  - **जैव विविधता**: नदी के प्रवाह में परिवर्तन से पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हो सकता है।

**स्रोत:**[इंडियन एक्सप्रेस - त्सांगपो बांध]

# जंगली जानवरों को कैसे ट्रैंक्विलाइज़ किया जाता है?

## संदर्भ

तीन सप्ताह के प्रयासों के बाद, **तीन वर्षीय बाघिन जीनत को पश्चिम बंगाल के बांकुरा जंगल में बेहोश(ट्रैंक्विलाइज़) कर पकड़ लिया गया।**

## वन्यजीव कैप्चर का विकास

- **प्रारंभिक विधियाँ:**
  - 20वीं सदी से पहले, व्यावसायिक पशु पकड़ने वाले लोग लैसोस, जाल और पिटफॉल का इस्तेमाल करते थे। इन क्रूर तरीकों के कारण अक्सर बछड़ों को पकड़ने के लिए माताओं का वध कर दिया जाता था।
- **हेग शांति सम्मेलन (1899):** इसने ब्रिटिश सेना द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली डम-डम गोलियों पर उनके भयानक प्रभावों के कारण प्रतिबंध लगा दिया। इसके परिणामस्वरूप नारकोटिक गोलियों (1912) जैसे प्रयोगों को बढ़ावा मिला, ताकि जानवरों को बिना दर्द के पकड़ा जा सके।
- **आधुनिक ट्रैंक्विलाइज़र गन का आविष्कार:**
  - **1956 में कोलिन मर्डोक ने डिस्पोजेबल प्लास्टिक सिरिंज और आधुनिक ट्रैंक्विलाइज़र गन का आविष्कार किया।**
  - **अवयव:**
    - बैलिस्टिक सिरिंज दवाओं से भरी होती है तथा उसमें हाइपोडर्मिक सुई लगी होती है।
    - इसे संपीड़ित $CO_2$ गैस का उपयोग करके चलाया जाता है।
    - पंखयुक्त टेलपीस उड़ान में डार्ट को स्थिर रखता है।
    - डार्ट का बार्ब यह सुनिश्चित करता है कि पूरी खुराक त्वचा के नीचे पहुंचाई जाए।
  - **प्रभावी शूटिंग रेंज: 200 फीट** तक (आमतौर पर **बाघों के लिए 50 फीट** )।
- **वन्यजीवों को ट्रैंक्विलाइज़ करने में प्रयुक्त दवाएं:**
  - **M99 (एटोर्फिन):** यह मॉर्फिन से भी अधिक शक्तिशाली ओपिओइड है, जिसका उपयोग हाथियों जैसे बड़े स्तनधारियों के लिए किया जाता है।
  - **ज़ाइलाजिन + केटामाइन:** ज़ाइलाजिन (ट्रान्क के रूप में) और केटामाइन (डेट-रेप ड्रग के रूप में) के बढ़ते दुरुपयोग ने उनकी उपलब्धता को सीमित कर दिया है।
  - **टेलाज़ोल:** टिलेटामाइन और ज़ोलाज़ेपाम का एक पूर्व-मिश्रित संयोजन, जो एक लोकप्रिय विकल्प बन रहा है।
- **वन्यजीवों को ट्रैंक्विलाइज़ करने की चुनौतियाँ:**
  - **प्रभावी ट्रैंक्विलाइज़ेशन के लिए** निकटता आवश्यक है: बाघों के लिए 50 फीट।
  - स्पष्ट दृष्टि रेखा, क्योंकि छोटी सी बाधा भी डार्ट को विक्षेपित कर सकती है।
  - सही खुराक निर्धारित करने के लिए पशु के वजन का सटीक अनुमान लगाना।
  - **गलत खुराक के जोखिम:**
    - **कम खुराक:** इससे बेहोशी की दवा अप्रभावी हो जाती है।
    - **अधिक मात्रा:** पशु के जीवन को खतरा हो सकता है।

**स्रोत:**

- **इंडियन एक्सप्रेस – वन्यजीवों को पकड़ना और ट्रैंक्विलाइज़ करना**

# समाचार में व्यक्तित्व

## रानी वेलु नचियार (1730-1796)

- **1730 में रामनाड साम्राज्य (वर्तमान तमिलनाडु) के राजा चेल्लामुथु सेतुपति और रानी सकंधीमुथल के घर जन्मी।**
- वह कई भाषाओं - फ्रेंच, अंग्रेजी, उर्दू (बहुभाषी) में पारंगत थीं और सैन्य रणनीति में कुशल थीं।
- **उन्हें तमिलनाडु की 'वीरमंगई' (बहादुर महिला) के रूप में सम्मानित किया जाता है।**
- हैदर अली और गोपाल नायकर के सहयोग से, उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया और शिवगंगई साम्राज्य पर वापस दावा किया, जिस पर पहले उनके पति का शासन था।
- उन्होंने ब्रिटिश गोला-बारूद भंडारों के खिलाफ पहला मानव बम हमला किया।

**स्रोत:**

- पीआईबी- प्रधानमंत्री ने रानी वेलु नचियार को उनकी जयंती पर याद किया

## सावित्री बाई फुले

- **समाज सुधारक, कवयित्री और शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगांव में हुआ था।**
- उनका विवाह ज्योतिराव फुले से हुआ था।
- **सावित्रीबाई पहली भारतीय महिला शिक्षिका बनीं।**
- **सावित्रीबाई फुले और ज्योतिराव फुले ने 1848 में पुणे में महिलाओं के लिए भारत का पहला स्कूल खोला।**
- उन्हें भारत में नारीवाद की अग्रणी के रूप में पहचाना जाता है क्योंकि उन्होंने दहेज और अन्य दमनकारी सामाजिक रीति-रिवाजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।
- 1852 में उन्होंने महिला अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए महिला सेवा मंडल की शुरुआत की।
- **सावित्री बाई की पुस्तकें**: काव्य फुले और बावन काशी सुबोध रत्नाकर।

**स्रोत:**

- पीआईबी - प्रधानमंत्री ने सावित्रीबाई फुले जी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की

# समाचार संक्षेप में

## विभिन्न राज्यों में लॉजिस्टीक्स सुगमता(LEADS) 2024' रिपोर्ट

- **इसे केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है।**
- **यह LEADS रिपोर्ट का 6वां संस्करण है। (पहला संस्करण- 2018)**
- यह राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को लॉजिस्टीक्स बुनियादी ढांचे, सेवाओं और स्थिरता में सुधार के लिए कार्रवाई योग्य जानकारी प्रदान करता है।
- **चार प्रमुख स्तंभों के आधार पर प्रदर्शन का मूल्यांकन:**
    - लॉजिस्टीक्स अवसंरचना
    - लॉजिस्टीक्स सेवा
    - परिचालन और विनियामक वातावरण
    - सतत लॉजिस्टीक्स (नया शुरू किया गया)
- **प्रदर्शन श्रेणियाँ: (अचीवर्स, फास्ट मूवर्स, एस्पायरर्स)**
    - **तटीय राज्य - सफल**: गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा, तमिलनाडु।
    - **स्थलरुद्ध राज्य- सफल राज्य**: हरियाणा, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड।
    - **पूर्वोत्तर राज्य- सफल**: असम, अरुणाचल प्रदेश।
    - **केंद्र शासित प्रदेश (यूटी) - उपलब्धियां**: चंडीगढ़, दिल्ली।

**स्रोत:**

- [पीआईबी - पीयूष गोयल ने 'लीड्स 2024' रिपोर्ट का अनावरण किया]

## DGCA के नए प्रमुख

- हाल ही में वरिष्ठ आईएएस अधिकारी फैज अहमद किदवई को नागरिक विमानन महानिदेशालय (DGCA) का नया महानिदेशक (डीजी) नियुक्त किया गया।

### DGCA के बारे में

- **DGCA विमान संशोधन अधिनियम, 2020 के तहत एक वैधानिक निकाय है जो भारत में नागरिक विमानन को विनियमित करने के लिए जिम्मेदार है।**
- **नोडल मंत्रालय:** नागरिक उड्डयन मंत्रालय।
- **कार्य:**
    - देश में हवाई परिवहन सेवाओं की सुरक्षा, सुरक्षा और दक्षता सुनिश्चित करना।
    - पायलटों, विमान रखरखाव इंजीनियरों और अन्य विमानन कर्मियों को लाइसेंस जारी करना।
    - एयरलाइंस, हवाई अड्डों और विमानन-संबंधित संस्थाओं की सुरक्षा ऑडिट और निरीक्षण करना।
    - विमानन घटनाओं की जांच करना।
    - अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (ICAO) जैसे अंतर्राष्ट्रीय विमानन संगठनों में भारत का प्रतिनिधित्व करना।

**स्रोत:**

- [द हिन्दू - DGCA के नए प्रमुख]

# संपादकीय सारांश

## भारत, सीमापार दिवालियापन और कानूनी सुधार

### संदर्भ

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि ने प्रभावी सीमा-पार दिवालियापन विनियमन की आवश्यकता को तीव्र कर दिया है।

### सीमापार दिवालियापन क्या है?

- जब किसी दिवालिया देनदार(debtor) के पास एक से अधिक क्षेत्राधिकारों में अर्थात् विभिन्न देशों में ऋण हों।
- घरेलू दिवालियापन कार्यवाही में, दिवालियापन पेशेवर कई प्रमुख कार्य करता है।
    - सबसे पहले, वे देनदार के स्वामित्व वाली परिसंपत्तियों की पहचान करते हैं।
    - इसके बाद, वे यह निर्धारित करते हैं कि किन लेनदारों(creditors) को पैसा देना है तथा प्रत्येक को कितना देना है।
    - यह जानकारी एकत्र करने के बाद, दावों का निपटारा प्राथमिकता नियम के आधार पर किया जाता है।
- इस निपटान के लिए न्यायनिर्णयन प्राधिकरण से अनुमोदन की आवश्यकता है।

### भारत में दिवालियापन कानून

- **ब्रिटिश शासन के अंतर्गत:**
    - **भारतीय दिवालियापन अधिनियम(1848):** घरेलू दिवालियापन से निपटने वाला पहला दिवालियापन कानून।
    - **प्रेसीडेंसी-टाउन दिवालियापन अधिनियम(1909):** कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास पर लागू।
    - **प्रांतीय दिवालियापन अधिनियम(1920):** यह अधिनियम मुफस्सिल क्षेत्रों में दिवालियापन को नियंत्रित करता था।
    - **सीमाएँ**: ये कानून सीमा पार दिवालियापन से संबंधित नहीं थे।
- **स्वतंत्रता के बाद की अवधि:**
    - तीसरे विधि आयोग की **26वीं रिपोर्ट (1964) में** आधुनिकीकरण की सिफारिश के बावजूद कानून अपरिवर्तित रहे।
    - **1990 के दशक में** आर्थिक उदारीकरण के साथ सीमा पार दिवालियापन चर्चाओं को प्रमुखता मिली।
    - कई समितियों ने **सीमापार दिवालियापन पर संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कानून आयोग (UNCITRAL ) के मॉडल कानून को अपनाने की सिफारिश की (1997):**
        - **एराडी समिति (2000)।**
        - **मित्रा समिति (2001)।**
        - **ईरानी समिति (2005)।**
        - **दिवालियापन कानून समिति** ने 2018 में UNCITRAL मॉडल कानून को अपनाने की सिफारिश की।
        - **वित्त पर संसदीय स्थायी समिति (2021 और 2024):** नियामक अंतर को दूर करने के लिए मॉडल कानून को तत्काल अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला
    - **दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता, 2016 (IBC)** को भारत में दिवाला और शोधन अक्षमता को नियंत्रित करने वाले प्राथमिक कानून के रूप में पेश किया गया था।

- **धारा 234** भारत सरकार को सीमा पार दिवालियापन मामलों के प्रबंधन के लिए अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय समझौते करने का अधिकार देती है।
- **धारा 235** भारतीय अदालतों को कॉर्पोरेट देनदार की परिसंपत्तियों और मामलों को निपटाने में विदेशी अदालतों से सहायता लेने की अनुमति देती है।
- **धारा 60(5):** सिविल अदालतों को सीमा पार के मामलों सहित दिवालियापन मामलों पर अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने से प्रतिबंधित करता है।
    - यह धारा NCLT को एकमात्र निर्णायक प्राधिकारी बनाती है।

### सीमा-पार दिवालियापन पर UNCITRAL मॉडल कानून (1997): मुख्य विशेषताएं

- **विदेशी न्यायालयों तक पहुंच:** यह एक क्षेत्राधिकार के दिवालियापन व्यवसायियों या प्रतिनिधियों को विदेशी न्यायालयों से मान्यता और सहायता प्राप्त करने की अनुमति देता है।
- **विदेशी कार्यवाहियों की मान्यता:** विदेशी कार्यवाहियों को निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:
    - **मुख्य कार्यवाही:** जहां देनदार का मुख्य हितों का केंद्र (COMI) होता है।
    - **गैर-मुख्य कार्यवाहियाँ:** जहां देनदार का कोई प्रतिष्ठान हो।
- **राहत उपाय:** विदेशी कार्यवाहियों को समर्थन देने के लिए स्वचालित और विवेकाधीन राहत प्रदान करता है, जिसमें स्थगन और परिसंपत्ति संरक्षण आदेश शामिल हैं।
- **न्यायालयों और प्रशासकों के बीच सहयोग:** यह विभिन्न न्यायक्षेत्रों के न्यायालयों और दिवालियापन व्यवसायियों के बीच सीधे संचार और सहयोग को प्रोत्साहित करता है।
- **ऋणदाताओं के साथ समानता:** यह सुनिश्चित करता है कि ऋणदाताओं के साथ उनकी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना निष्पक्ष व्यवहार किया जाए।

## भारत में सीमा पार दिवालियापन की चुनौतियाँ

- पारस्परिक व्यवस्था के अभाव तथा सरकार द्वारा अधिसूचना न दिए जाने के कारण आईबीसी की धारा 234 और 235 के प्रावधान लागू नहीं हो पाए हैं।

### प्रमुख केस अध्ययन

- **भारतीय स्टेट बैंक बनाम जेट एयरवेज़ (2019):** धारा 234 और 235 की निष्क्रिय स्थिति को उजागर किया।
    - भारत में पारस्परिक व्यवस्था की कमी पर प्रकाश डाला गया।
- **जेट एयरवेज़ (इंडिया) लिमिटेड बनाम भारतीय स्टेट बैंक (2019):** अस्थायी समाधान के रूप में सीमा-पार दिवालियापन प्रोटोकॉल पेश किया गया।

- सीमापार दिवालियापन के लिए संरचित ढांचे का अभाव।
- तदर्थ प्रोटोकॉल पर निर्भरता से न्यायिक बोझ और देरी बढ़ जाती है।

## भारत में मॉडल कानून को लागू करने में चुनौतियाँ

- **क्षेत्राधिकार संबंधी सीमाएं:** विदेशी निर्णयों को मान्यता देने और लागू करने में NCLT (राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण) की सीमित शक्तियां कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं।
- **पारस्परिक समझौतों का अभाव:** भारत को सीमापार दिवालियापन प्रावधानों को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने के लिए द्विपक्षीय समझौतों की आवश्यकता है।
- **न्यायिक विशेषज्ञता:** जटिल सीमा-पार मामलों को संभालने के लिए न्यायाधीशों और दिवालियापन पेशेवरों के लिए क्षमता निर्माण की आवश्यकता है।

  - NCLT को संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है, क्योंकि न्यायाधीशों को अक्सर एक साथ कई मामलों को संभालना पड़ता है। इस स्थिति के कारण दिवालियापन आवेदनों की प्रक्रिया में काफी देरी होती है।
- **घरेलू कानूनों के साथ टकराव:** मौजूदा IBC प्रावधानों और अन्य घरेलू कानूनों के साथ मॉडल कानून का सामंजस्य स्थापित करना महत्वपूर्ण है।

## सुधार संबंधी सिफारिशें

- **UNCITRAL मॉडल कानून को अपनाना:** सीमापार दिवालियापन के लिए एक संरचित ढांचा प्रदान करता है।
  - इससे विलंब, लेनदेन लागत और न्यायिक बोझ कम हो जाता है।
- **न्यायालयों के बीच संचार का आधुनिकीकरण:**
  - **न्यायिक दिवालियापन नेटवर्क (जेआईएन) दिशानिर्देश (2016)** और **न्यायालय-से-न्यायालय संचार के तौर-तरीके (2018):**
    - पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाना।
- **NCLT की शक्तियों का विस्तार:** इसके अधिकार क्षेत्र को मजबूत करने से सीमापार दिवालियापन प्रबंधन प्रभावी हो सकेगा।

**स्रोत:** द हिंदू: भारत, सीमापार दिवालियापन और कानूनी सुधार

# उपभोग अभी भी चिंता का विषय

## संदर्भ

हाल ही में जारी किए गए कई आर्थिक संकेतक वित्तीय वर्ष 2024-25 की दूसरी छमाही में, विशेष रूप से अक्टूबर-दिसंबर तिमाही के लिए संवृद्धि दर में उछाल की उम्मीदों के लिए चुनौतियां पेश करते हैं।

## तथ्य और डेटा

- **जीडीपी संवृद्धि**: 2024-25 की दूसरी तिमाही में जीडीपी संवृद्धि घटकर 5.4% रह गई।
- **बैंक ऋण वृद्धि**: नवंबर में लगातार पांचवें महीने धीमी रही।
- **कोर इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर ग्रोथ**: नवंबर में चार महीने की उच्च गति 4.3% पर विस्तारित।
    - उत्पादन स्तर अक्टूबर से 3.3% कम था और आठ में से छह क्षेत्र कम क्षमता पर काम कर रहे थे।
- **क्रय प्रबंधक सूचकांक (PMI):** नवंबर और दिसंबर 2024 में फैक्ट्री गतिविधि 2024 के दौरान सबसे खराब थी (56.5 से गिरकर 56.4 पर आ गई)।
- **वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) राजस्व:**
    - दिसंबर जीएसटी राजस्व: ₹1.77 लाख करोड़, जो तीन महीने का निचला स्तर है।
    - साल-दर-साल वृद्धि: 7.3%, 3.5 वर्षों में संयुक्त रूप से दूसरी सबसे धीमी वृद्धि।
    - लगातार चौथे महीने 10% से कम वृद्धि।
    - राजस्व में साल-दर-साल वृद्धि: 8.6%, जिससे 11% विकास लक्ष्य चुनौतीपूर्ण हो गया है।
    - रिफंड के बाद शुद्ध राजस्व: केवल 3.3% की दर से बढ़ा, जो इस वित्तीय वर्ष में सबसे धीमी गति है।
    - घरेलू लेनदेन राजस्व वृद्धि: 8.4%।
    - आयात राजस्व वृद्धि: 3.9%।
- **माल आयात बिल:**
    - नवंबर माल आयात बिल: $70 बिलियन, पिछले स्तर से 27% की वृद्धि।

## आर्थिक विकास के लिए उपभोग का महत्व

- **जीडीपी संवृद्धि का प्रमुख चालक:** अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में निजी खपत जीडीपी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत में, खपत जीडीपी में लगभग 60% योगदान देती है , जो सीधे आर्थिक उत्पादन को प्रभावित करती है।
- **वस्तुओं और सेवाओं की मांग में वृद्धि:** उच्च उपभोग से वस्तुओं और सेवाओं की मांग में वृद्धि होती है, जिससे औद्योगिक उत्पादन और सेवा क्षेत्र में वृद्धि होती है, जिससे रोजगार सृजन होता है।
- **निवेश को प्रोत्साहन:** उपभोग में वृद्धि से व्यवसायों के लिए क्षमता विस्तार, अनुसंधान और नवाचार में निवेश करने हेतु अनुकूल परिस्थितियां बनती हैं, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।
- **गुणक प्रभाव:** उपभोक्ताओं द्वारा किया गया व्यय उत्पादकों और श्रमिकों के लिए आय उत्पन्न करता है, जो बदले में अपनी कमाई खर्च करते हैं, जिससे गुणक प्रभाव उत्पन्न होता है जो आर्थिक विकास को बढ़ाता है।
- **सरकारी राजस्व:** अधिक खपत के परिणामस्वरूप जीएसटी जैसे अप्रत्यक्ष करों के माध्यम से राजस्व में वृद्धि होती है, जिससे सरकारों को विकास परियोजनाओं और कल्याणकारी कार्यक्रमों के वित्तपोषण में मदद मिलती है।
- **वैश्विक झटकों के प्रति लचीलापन:** मजबूत घरेलू खपत वाली अर्थव्यवस्थाएं निर्यात जैसे बाहरी कारकों पर कम निर्भर होती हैं, जिससे वे वैश्विक अनिश्चितताओं के प्रति अधिक लचीली होती हैं।

## उपभोग बढ़ाने के लिए केंद्र और आरबीआई द्वारा उठाए जा सकने वाले कदम

- **मुद्रास्फीति पर नियंत्रण:** क्रय शक्ति की रक्षा के लिए बढ़ती कीमतों पर नियंत्रण रखना।
- **ऋण प्रवाह में वृद्धि:** खुदरा ऋण तक आसान पहुंच सुनिश्चित करना, जिससे उपभोक्ता अधिक खर्च कर सकें।
- **शहरी मांग को प्रोत्साहित करना:** त्योहारी मौसम के बाद होने वाली खर्च में मंदी का मुकाबला करने के लिए शहरी परिवारों को प्रोत्साहन देने पर ध्यान केंद्रित करना।
- **ग्रामीण मांग को समर्थन:** लक्षित कार्यक्रमों और न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) समायोजन के माध्यम से ग्रामीण आय को मजबूत करना।
- **रोजगार सृजन:** रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित करें, क्योंकि स्थिर रोजगार से उपभोक्ता विश्वास और व्यय बढ़ता है।
- **उपभोग-उन्मुख नीतियों पर ध्यान केंद्रित करना:** अप्रत्यक्ष कर बोझ को कम करना और उपभोग को बढ़ावा देने के लिए निम्न आय वर्ग को लक्षित सब्सिडी प्रदान करना।

**स्रोत:** द हिंदू: गति खोना

# वैश्विक अस्थिरता के साथ, भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए सामंजस्य की आवश्यकता है

## संदर्भ

यह वर्ष वैश्विक स्तर पर वर्तमान प्रशासनों के लिए कठिन साबित हुआ, जिसमें कई सरकारों को आर्थिक मुद्दों और राजनीतिक असंतोष के कारण प्रतिकूल प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा।

## विभिन्न देशों में राजनीतिक उथल-पुथल (2024)

- **दक्षिण एशिया**
  - **बांग्लादेश**: शेख हसीना जनवरी में सत्ता में लौटीं, लेकिन अगस्त में छात्र विरोध प्रदर्शनों के कारण उन्हें पद से हटा दिया गया, जिससे उन्हें देश छोड़कर भागना पड़ा।
  - **श्रीलंका**: सितम्बर में हुए चुनावों में पारंपरिक पार्टियों की जगह नेशनल पीपुल्स पावर सत्ता में आई।
- **पूर्व एशिया**
  - **दक्षिण कोरिया**: सत्तारूढ़ पीपुल्स पावर पार्टी को अप्रैल में डेमोक्रेटिक पार्टी ने हरा दिया।
    - वर्ष का अंत राष्ट्रपति द्वारा लगाए गए आपातकाल और उनके महाभियोग की मांग के साथ हुआ।
  - **जापान**: लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एल.डी.पी.) को अक्टूबर में भारी नुकसान उठाना पड़ा, वह अपने गठबंधन सहयोगी कोमिटो के साथ भी संसदीय बहुमत हासिल करने में असफल रही।
    - अस्थिर गठबंधन का नेतृत्व अब प्रधानमंत्री शिगेरु इशिबा कर रहे हैं।
- **अफ्रीका**
  - **दक्षिण अफ्रीका**: मई में हुए चुनावों ने अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस (एएनसी) के प्रभुत्व को समाप्त कर दिया, तथा उसे पहली बार गठबंधन में शामिल होने के लिए बाध्य होना पड़ा।
- **यूरोप**
  - **फ्रांस और जर्मनी**: जून में हुए राष्ट्रीय और यूरोपीय संसद चुनावों में दक्षिणपंथी पार्टियों की स्थिति नाटकीय रूप से सुधरी।
    - फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने वाली दक्षिणपंथी लहर को रोकने के लिए शीघ्र चुनाव कराने का आह्वान किया।
  - **यूनाइटेड किंगडम**: जुलाई में कंजर्वेटिव पार्टी को ऐतिहासिक हार का सामना करना पड़ा, जिससे लेबर पार्टी 14 वर्षों के बाद पुनः सत्ता में आई।
- **संयुक्त राज्य अमेरिका**: डोनाल्ड ट्रम्प भारी जनादेश के साथ सत्ता में लौटे, उन्होंने कमला हैरिस को हराया और कांग्रेस में रिपब्लिकन बहुमत हासिल किया।

## भारत का आर्थिक संदर्भ

- **जीडीपी संवृद्धि:** भारत ने हाल के वर्षों में 7% से अधिक की जीडीपी संवृद्धि दर दर्ज की, जो कोविड-19 महामारी के बाद मजबूती से वापस लौटी।
  - विश्व बैंक ने वित्त वर्ष 2025 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर के पूर्वानुमान को संशोधित कर **7%** कर दिया है, जो पहले 6.6% था।
- **वैश्विक तुलना:** भारत सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा, तथा वह चीन से आगे रहेगा, जिसकी वृद्धि दर 4.7% है।
- **ऋण और घाटा:** ऋण-जीडीपी अनुपात 83.9% से घटकर 82% हो गया ।
  - अगले कुछ वर्षों तक चालू खाता घाटा कम, सकल घरेलू उत्पाद के 1% से 1.5% के बीच रहने की उम्मीद है।

## चुनौतियां

- लगातार बने रहने वाले मुद्दों में बेरोजगारी, स्थिर निर्यात और निजी एवं कॉर्पोरेट निवेश का निम्न स्तर शामिल हैं।
- मुद्रास्फीति चिंता का विषय बनी हुई है, जो उपभोग और मांग को प्रभावित कर रही है।
- सार्वजनिक निवेश मजबूत है, जो सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।
    - हालाँकि, निजी क्षेत्र की भागीदारी अभी भी बहुत कम है, जिसके लिए तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई की आवश्यकता है।
- आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राजनीतिक स्थिरता और सामाजिक सद्भाव को आवश्यक माना जाता है।
    - चीन और सिंगापुर जैसे देशों के ऐतिहासिक उदाहरण दर्शाते हैं कि सतत विकास स्थिर शासन से जुड़ा हुआ है।
    - इसके विपरीत, भारत स्वतंत्रता के बाद से उच्च विकास दर बनाए रखने के लिए संघर्ष करता रहा है।

## भविष्य का दृष्टिकोण

- **विकास पथ:** लगातार विकास और सुधारों के साथ, भारत से वैश्विक आर्थिक उज्ज्वल स्थान के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखने की उम्मीद है।
- **विकास के प्रमुख कारक:**
    - **सार्वजनिक अवसंरचना निवेश:** सड़क, रेलवे, ऊर्जा और ग्रामीण विकास पर निरंतर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
    - **निर्यात विविधीकरण:** विनिर्माण और निर्यात वृद्धि को समर्थन देने के लिए वैश्विक व्यापार संबंधों को मजबूत करना।
    - **स्टार्टअप इकोसिस्टम: स्टार्टअप इंडिया** जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से नवाचार का लाभ उठाना और उभरते क्षेत्रों (एआई, फिनटेक और नवीकरणीय ऊर्जा) पर ध्यान केंद्रित करना।
- **रोजगार और कौशल विकास:** श्रम-प्रधान उद्योगों और विस्तारित कौशल कार्यक्रमों के माध्यम से बेरोजगारी से निपटना ताकि कार्यबल को डिजिटल भविष्य के लिए तैयार किया जा सके।
- **निजी क्षेत्र का पुनरुद्धार:** निजी क्षेत्र और कॉर्पोरेट निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए नीतिगत प्रोत्साहन।
    - औद्योगिक विस्तार को बढ़ावा देने के लिए कर सुधार और सरलीकृत विनियमन।
- **वैश्विक स्थिति:** निर्यात बाजारों में विविधता लाने और पारंपरिक साझेदारों पर निर्भरता कम करने के लिए मजबूत मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) और रणनीतिक आर्थिक कूटनीति।
- **सामाजिक और राजनीतिक स्थिरता:** सामाजिक सद्भाव बनाए रखना और आर्थिक गतिविधियों में व्यवधान से बचना, सतत विकास प्राप्त करने के लिए आवश्यक माना जाता है।

**स्रोत:** [इंडियन एक्सप्रेस: अर्थव्यवस्था का वर्ष]

# दिल्ली में इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) की ओर बदलाव

## संदर्भ

दिल्ली में वायु प्रदूषण बहुत ज़्यादा है, जिसमें परिवहन क्षेत्र सबसे बड़ा योगदानकर्ता है। अध्ययनों से पता चलता है कि प्रदूषण से जुड़ी स्वास्थ्य और आर्थिक लागत बहुत ज़्यादा है, खास तौर पर PM 2.5 उत्सर्जन के कारण, जो समय से पहले मौत और उच्च स्वास्थ्य देखभाल खर्च का कारण बनता है।

## वर्तमान परिदृश्य

- **परिवहन क्षेत्र उत्सर्जन:**
  - सालाना 48.37 Gg PM 2.5 होता है।
  - कारें (बेड़े का 32.44%) उत्सर्जन में 25.54% का योगदान करती हैं।
  - वाणिज्यिक वाहन (बेड़े का 2.56%): 39% उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार।
  - दोपहिया वाहन (बेड़े का 61.84%): अपेक्षाकृत कम उत्सर्जन हिस्सेदारी।
- **फसल जलाना:** हाल के वर्षों में मौसमी प्रभाव कम हुआ है, लेकिन वायु की गुणवत्ता खराब बनी हुई है।
- **CNG में परिवर्तन:** दो दशक पहले अपनाया गया, इससे प्रदूषण कम हुआ, लेकिन विशिष्ट परिस्थितियों में यह नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx) और द्वितीयक पीएम (PM) उत्सर्जित करता है।

## EV परिवर्तन का प्रभाव

दिल्ली में इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर पूर्ण बदलाव के परिणामस्वरूप निम्नलिखित परिणाम हो सकते हैं:

- **प्रदूषण में कमी और स्वास्थ्य लाभ:**
  - PM 2.5 सांद्रता में 40% की गिरावट।
  - मृत्यु-संबंधी लागत में 25.7% की कमी।
  - प्रति व्यक्ति स्वास्थ्य देखभाल लागत में 25% की कमी।
  - प्रदूषण से जुड़ी बीमारियों से आर्थिक लागत में 6% की गिरावट।
  - सालाना लगभग ₹11,000 करोड़ की बचत।
- **आंशिक हस्तक्षेप:** 15 वर्ष से अधिक पुरानी कारों को EV में परिवर्तित करना:
  - PM 2.5 में 9% की कमी ।
  - स्वास्थ्य देखभाल लागत में 6% की कमी।
- **जलवायु और स्वास्थ्य तालमेल:** मृत्यु दर और रुग्णता में कमी के कारण विकलांगता-समायोजित जीवन वर्ष (DALYs) में कमी।

## नीतिगत उपाय और प्रोत्साहन

- **दिल्ली की EV नीति (2020-2025):**
  - **सब्सिडी:** दोपहिया वाहनों के लिए 30,000 रुपये तक।
    - इलेक्ट्रिक कारों के लिए ₹1.5 लाख तक (बैटरी क्षमता के आधार पर)।
  - **बुनियादी ढांचे का विकास:** 25 नए चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना।

## चुनौतियां

- **उच्च लागत:** पारंपरिक वाहनों की तुलना में इलेक्ट्रिक वाहन महंगे हैं।
- **बुनियादी ढांचे की कमी:** सीमित चार्जिंग स्टेशन और धीमी चार्जिंग गति।
- **आयात पर निर्भरता:** लिथियम-आयन और अन्य बैटरी सामग्री का बड़े पैमाने पर आयात किया जाता है, जिससे लागत और पर्यावरण संबंधी चिंताएं बढ़ जाती हैं।

- **उपभोक्ता जागरूकता:** जनता के बीच EV लाभों की सीमित समझ।

## भविष्य का दृष्टिकोण

- **अल्पकालिक लक्ष्य (2025):** उच्च प्रदूषण वाले क्षेत्रों (जैसे, वाणिज्यिक वाहन, पुरानी कारें) से शुरुआत करके धीरे-धीरे अपनाना।
- जन जागरूकता अभियान बढ़ाएँ और चार्जिंग बुनियादी ढांचे में सुधार करना।
- **दीर्घकालिक लक्ष्य:** जलवायु संबंधी चिंताओं को कम करने, स्वास्थ्य देखभाल लागत को कम करने और वायु गुणवत्ता में सुधार करने के लिए पूर्ण EV संक्रमण प्राप्त करना।

**स्रोत:** इंडियन एक्सप्रेस: पर्यावरण के लिए जीत-जीत